PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Dainik Jagran, Delhi
Fri, 18 Aug 2017, Page 17
Width: 11.73 cms, Height: 23.25 cms, a4, Ref: 72.2017-08-18.170

पिछले 70 सालों की प्रतिनिधि 50 फिल्में

दरअसल

अजय ब्रह्मात्मज

आजादी के 70 सालों में हिंदी सिनेमा ने प्रगति के साथ विस्तार किया है। हर विधा में फिल्में बनी हैं। उन्हें दर्शकों ने पसंद किया। कुछ फिल्में रिलीज के समय अधिक नहीं सराही गईं, लेकिन समय बीतने के साथ उनका महत्व और प्रभाव बढ़ता गया। हॉलीवुड के बढ़ते प्रभाव के बावजूद हिंदी और अन्य भाषाओं की भारतीय फिल्में टिकी हुई हैं। इसे बॉलीवुड नाम से भी संबोधित किया जाता है। हालांकि यह नाम भारतीय सिनेमा के व्यापक परिप्रेक्ष्य को नहीं समेट पाता, फिर भी यह प्रचलित हो चुका है तो अधिक गुरेज करने की जरूरत नहीं है। नाम कोई भी लें हिंदी सिनेमा की खास पहचान है। उसकी विविधता अचंभित करती है। आजादी के 70 साल पूरे होने के मौके पर मैंने फेसबुक के जरिए अपने पाठकों और परिचितों से उनकी पसंद की किसी एक फिल्म के बारे में पूछा था। 500 से अधिक व्यक्तियों ने अपनी पसंद जाहिर की। 50 फिल्मों की यह सूची सिर्फ उनकी पसंद के आधार पर तैयार की गई है। इस सूची में शामिल सभी फिल्मों को कम से कम दो मत मिले हैं। मदर इंडिया, रंग दे बसंती, शोले, दो बीघा जमीन, प्यासा, गाइड, और जागते रहो को 10 या उससे अधिक व्यक्तियों ने पसंद किया। प्यासा सर्वाधिक प्रिय फिल्म रही। पूरी सूची पर नजर डालें तो पाएंगे कि पसंद में विविधता रही है। एक तरफ उन्होंने शोले और दबंग जैसी फिल्में पसंद कीं तो दूसरी तरफ गर्म हवा और पिंजर को भी सूचीबद्ध करने में पीछे नहीं रहे।

दर्शकों की पसंद की सूची यहां पढ़ सकते हैं। यह कोई मानक सूची नहीं है, लेकिन इतना तो पता चलता है कि अभी के दर्शक क्या पसंद कर रहे हैं? 3 इडियट, अंकुर, बैंडिट क्वीन, बॉर्डर, चक दे इंडिया, दो बीघा जमीन, दो आंखें बारह हाथ, गैंग्स ऑफ वासेपुर, गर्म हवा, गाइड, जागते रहो, क्रांति, लगान, मदर इंडिया, मुगलेआजम, प्यासा, पिंजर, पूरब और पश्चिम, रंग दे बसंती, शोले, टॉयलेट- एक प्रेम कथा, स्वदेस, तारे जमीं पर, तीसरी कसम, श्री 420, शहीद, सारांश, पीके, पान सिंह तोमर, निशांत, नदिया के पार, मृत्युदंड, कागज के फूल, मेरा नाम जोकर, मैं आजाद हूं, इंडियन, गुलामी, एक डाक्टर की मौत, ब्लैक फ्राइडे, बावर्ची, बंदिनी, बाहुबली, अलीगढ़, अमर प्रेम, भाग मिल्खा भाग, उपकार, दबंग, दंगल, और सत्यकाम।

इस सर्वे में सभी उम्र के दर्शकों ने हिस्सा लिया। सोशल मीडिया पर पुरुष ज्यादा है, इसलिए उनका अनुपात ज्यादा रहा। मुझे लगता है कि ऐसे सर्वे में लड़कियां हिस्सा लें तो फिल्मों की सूची बदल सकती है। मुझे आश्चर्य हुआ कि पीकू और पिंक किसी की पसंद नहीं रही। दूसरा आश्चर्य यह भी रहा कि टॉयलेट- एक प्रेम कथा को पांच ने पसंद किया। दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे और हम आप के है कौन भी दर्शकों की पसंद में शामिल नहीं हैं। करण जौहर की भी उन्होंने उपेक्षा की, जबकि नीरज घेवन की मसान को दर्शकों ने पसंद किया। मनोरंजन के लोकतंत्र में पसंद-नापसंद की कसौटी अलग होती है। यह सूची यह भी संकेत देती है कि लंबे समय में किस तरह की फिल्में दर्शकों की पसंद बनती हैं।

अगर आप ने इस सूची की कोई फिल्म नहीं देखी हो, तो अवश्य देखें। फिल्में हमारे दैनंदिन जीवन का हिस्सा हैं। हम उनसे आनंदित होते हैं। कुछ सीखते-समझते हैं। कई बार जाने-अनजाने हम नायक-नायिका को अपने जीवन में उतारना चाहते हैं। सिर्फ फैशन और स्टाइल में ही नहीं। यह प्रभाव दर्शन और जीवनशैली पर भी पड़ता है।